शान्त माँ और शोरगुल करने वाला छोटा लड़का

लेखनः शारलट ज़ालटोव

चित्रः मेयर साइमन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक समय एक छोटा-सा लड़का था, जिसका नाम सैंडी था। उसे शोर पसन्द था, इतना कि शोर उसका हिस्सा ही बन चुका था। सो वह हमेशा शोरगुल करता रहता था। उसे भागना-दौड़ना, कूदना, बोलना, और बोलना, और-और बोलते जाना बहुत ही अच्छा लगता था।

एक दिन सैंडी का चचेरा भाई, रॉजर, उससे मिलने आया। वह घर-भर में तूफ़ान की मानिन्द दौड़ा। बिजली की कड़कड़ाती-सी आवाज़ में बोला। रॉजर सभी लड़कों में सबसे जंगली और बेहद शोर मचाने वाला बच्चा था।

दिन ख़्त्म होता उसके पहले सैंडी और उसकी माँ ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ सीखा - अलग-अलग समय और अलग-अलग चीज़ों के लिए चुप्पी और शोर दोनों ही सही हैं। इस विनोद भरी प्यारी-सी कहानी की मशहूर लेखिका हैं, शारलट ज़ालटोव और इसके खूबसूरत चित्र मेयर साइमन्ट ने बनाए हैं।

शान्त माँ और शोरगुल करने वाला छोटा लड़का

लेखनः शारलट ज़ालटोव

चित्रः मेयर साइमन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक समय एक लड़का था, जिसे शोर बहुत पसन्द था।

शोर तो उसका हिस्सा ही बन चुका था, सो वह हमेशा शोरगुल करता था।

वह अपनी माँ से बहुत ही ऊँची आवाज़ में बात करता था।

वह अपने पिता से भी अपनी सबसे ऊँची आवाज़ में बात करता था।

और हर सुबह उसके माँ और पिता जागते उसके बहुत पहले से ही वह अपने आपसे ऊँची आवाज़ में बतियाने लगता। और हर रात जब उसे सो जाना चाहिए होता, उसके भी बहुत बाद तक उसकी माँ, उसे अपनी छोटे लड़के वाली आवाज़ में ज़ोर-ज़ोर से बोलते, और बोलते, और-और बोलते सुना करती थी।

उस छोटे लड़के को पुरज़ोर आवाज़ में बजते रिकॉर्ड सुनना अच्छा लगता था। वह टेलिविज़न भी ऊँची आवाज़ में देखता-सुनता। और अपने छोटे भूरे कुत्ते से खेलते समय भी वह शोर करता था। वह सब कुछ इतने शोर-शराबे के साथ करता कि वह घर के किसी दूसरे कोने भी होता तब भी उसकी माँ को पता चल जाता कि वह उस वक़्त कर क्या रहा है।

किर्रर्रर्र! "उसकी ऊपरी दराज," सैंडी की माँ ने एक सुबह कहा।

घिर्रर्रर्र! "अब उसने दराज बन्द कर ही है," माँ ने मन ही मन सोचा।

तब कुछ गिरने की आवाज़, मानो कोई ढ़क्कन आले पर से नीचे गिरा हो।

"उसकी टोपी," माँ ने सोचा।

तब धातु की खड़खड़ाहट, मानो कपड़े टाँगने का हैंगर फर्श पर गिरा हो। "उसका स्वैटर!"

धड़, धड़ाक, धड़, धड़ाक।

"वह ज़ीने की सीढ़ियों से नीचे उतर आया है।"

फटाक। रसोई और खाने के कमरे के बीच बना जाली का दरवाज़ा आगे-पीछे झूला। और जब छोटा लड़का रसोई से दौड़ते हुए बाहर पिछवाड़े में निकला रसोई का दरवाज़ा धड़ाम से बन्द हुआ।

अब माँ को छोटे लड़के की चीखें बगीचे से आती सुनाई दीं। छोटा भूरा कुत्ता लड़के का साथ पा खुशी से ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहा था, उसके बावजूद छोटे लड़के की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी।

"काश! मुझे शोरगुल पसन्द आता," माँ ने अपना सिर पकड़ कर कहा। "मुझे बिना शोर-शराबे की ज़िन्दगी चाहिए।"

"शोर न हो तो तुम्हें उसकी कमी खलेगी," पिता ने मुस्करा कर कहा।

पर माँ को ऐसा कतई नहीं लगा।

केवल दो ही चीज़ें थीं जो उस छोटे लड़के को चुप रखती थीं, ये थीं क़िताबें और पज़ल्स।

एक सुबह जब छोटे लड़के ने बैठक की फर्श पर अपनी नई पज़ल के टुकड़े बिखेर उसे बनाना शुरु किया ही था, कि पिता उसे गाड़ी में बैठा उसके चचेरे भाई रॉजर से मिलवाने ले गए।

दरअसल रॉजर अपने परिवार के साथ कुछ समय पहले ही सैंडी के शहर में रहने आया था। सैंडी ने रॉजर का घर देखा ही नहीं था, ना रॉजर ने सैंडी का।

''मैं दोपहर के खाने के बाद दोनों को यहीं लेता आउंगा,'' सैंडी के पिता ने जाते समय माँ को चूमते हुए कहा।

''तुम चुप्पी का मज़ा लो,'' पिता ने मुस्करा कर कहा।

जब वे दोनों निकल गए माँ ने एक कप कॉफी बनाई और एकदम शान्त बैठक में उसे पीने बैठीं।

''वाह! कितनी सुकून भरी शान्ति है,'' उसने सोचा।

कॉफी गरमा-गरम थी और हर ओर चुप्पी पसरी हुई थी, मानो पूरी दुनिया ही थम गई हो। कुछ समय बाद उसे अजीब महसूस होने लगा।

उसे लगा मानो बैठक में रखे पौधे भी असामान्य रूप से शान्त हैं। बन्द रिकॉर्ड प्लेयर और टेलिविज़न का सूना परदा निहायत बेचारे अकेले-से लग रहे थे। और सीढ़ियाँ, उन्हें तो इतना चुप होना ही नहीं चाहिए था।

आले पर धरी क़िताबें और सभी दरवाज़ों की जालियाँ गुमसुम थीं। माँ घर में ऐसे घूमती फिरी, जैसे वह घर उसका नहीं, किसी और का हो। सुबह बीतती गई और माँ अपने गिर्द छाई चुप्पी को सुनती रही। उसने पढ़ने के लिए एक क़िताब खोली और किसी चीज़ ने कोई बाधा पैदा ही नहीं की।

उसे पूरे घर में एक ही आवाज़ सुनाई दे रही थी, घड़ी की टिकटिक, जो बीतते समय की ओर इशारा कर रही थी।

मामला आखिर क्या है? उसने सोचा।

और जवाब फौरन मिला।

"मुझे अपने नन्हे बेटे की कमी खल रही है," उसने कहा।

ठीक उसी पल बाहर गाड़ी के दरवाज़ों के खुलने की आवाजें आईं। सैंडी और उसके पिता लौट आए थे। पिछवाड़े के रास्ते में घसर-पसर, खटर-पटर सुनाई दी और सैंडी उछलता हुआ अन्दर आया और माँ की बाँहों में लिपट गया।

"हाय मॉम, अब रॉजर हमारे घर आया है।"

"अरे वाह," माँ ने कहा। वह आगे कुछ कहने ही वाली थीं, पर अचानक सीधी हुईं और उन्होंने अपना हाथ अपने दिल पर रख लिया। दरअसल रॉजर इतनी ज़ोर से चिल्ला रहा था, जितनी ज़ोर से सैंडी चिल्ला ही नहीं सकता था।

"मुझे आपका घर अच्छा लगा और माँ ने आपको प्यार भेजा है, और जब वे पाँच बजे मुझे लेने आएंगी, वे हॉर्न बजाएंगी।"

सैंडी ने फ़र्श पर पड़े पज़ल के टुकड़ों को देखा और रॉजर से बोला, "चलो अपन इसे पूरा करते हैं।"

"अभी नहीं," रॉजर चीखा **"पहले बिजली की ट्रेन से खेलते हैं।"**

सैंडी की माँ अमूमन धीमी आवाज़ में बोलती थीं, पर उन्हें अपनी बात सुनाने के लिए ज़ोर से बोलना पड़ा।

"शर्त लगे, रॉजर को तुम्हारी काउबॉय वाली नई क़िताब अच्छी लगेगी," वे बोलीं।

सैंडी अपनी क़िताब ढूंढ़ने ऊपर गया, पर वह उसे खोलता उसके पहले ही रॉजर ने चिल्लाना शुरू कर दियाः

"काउबॉय यिप यीईईईईई याआआआआ," और वह कमरे से बाहर निकल चीखते हुए दौड़ने लगा। पूरा घर मानो हिल गया। सैंडी के सोने के कमरे में कोई भारी चीज़ धड़ाम से गिरी और उसके टुकड़ों के बिखरने की आवाज़ आई।

"ओह," सैंडी की माँ बोलीं। "बैठक की छत ज़रूर तड़क गई होगी।"

पर वे उठ कर उसे देखतीं उसके पहले ही रॉजर काउबॉय बनने के खेल से उकता गया। उसे बिजली से चलने वाली रेलगाड़ी दिख चुकी थी! पटरियों पर चलने से होने वाली खटर-खट और रुकने पर बजने वाली सीटियों की आवाज़ को दबाते हुए रॉजर बिजली कड़कने की आवाज़ में चीखाः

"सभी सवारियाँ चढ़ जाएं

पूरब और पश्चिम जाने वाली

शिकागो, चिटनॉग, न्यू यॉर्क और युरोप जाने वाली,

सारी की सारी सवारियाँ चढ़ जाएं ..."

इतना शोर-शराबा मचा कि घंटे भर बाद जब गाड़ी का हॉर्न बजा सैंडी की माँ को उसकी आवाज़ सुनाई तक न दी। पर रॉजर ने सुन ली।

“अलविदा,” वह चिल्लाया।

बारूद के फटने की सी आवाज़ करते वह सीढ़ियों से उतरा, धड़-धड़ाक, धड़-धड़ाक।

“अलविदा, शुक्रिया, अलविदा,” गाड़ी की खिड़की से झांक हाथ हिलाते वह तब चिल्लाया, जब गाड़ी चल पड़ी।

सैंडी भी रॉजर के पीछे-पीछे सीढ़ियों से उतरा था। उसने पीछे के दरवाज़े के पास खड़े हो रॉजर को विदा किया था। रॉजर के जाने के बाद उसने एक गहरी उसाँस छोड़ी। जाली के दरवाज़े को सावधनी से बन्द किया। छोटा भूरा कुत्ता भी उसके पीछे पटर-पटर चलता आया।

सैंडी ने अन्दर आ अपनी माँ पर नज़र डाली। वे थकी लग रही थीं। माँ ने भी सैंडी को देखा।

"ओफ्फ्फ!" सैंडी ने कहा। "रॉजर बहुत ज़्यादा शोर करता है!"

"हाँ, सो तो है," माँ सहमत हुईं।

सैंडी ने फ़र्श पर बिखरे पज़ल के टुकड़े देखे और बोला, "कुछ चीज़ों के लिए चुप्पी की ज़रूरत होती है।"

सैंडी उन समयों को याद कर रहा था, जब उसने अपनी माँ को कहते सुना था, "काश, मुझे शोरगुल पसन्द होता।"

वह सोचने लगा कि उसे तय कर लेना चाहिए कि वह आइन्दा से शोर नहीं करेगा।

पर उसकी माँ ने भांप लिया कि वह क्या सोच रहा है।

माँ को याद आया कि सैंडी की नामौजूदगी में घर किस कदर सूना हो गया था।

"दोनों ही अच्छे हैं," उसने जल्दी से जोड़ा, "चुप्पी और शोर-शराबा, पर अलग-अलग समय, अलग-अलग चीज़ों के लिए। कभी चुप्पी सन्नाटे में भी बदल जाती है शोर ज़्यादा हो तो सहा नहीं जा सकता।"

माँ और सैंडी ने मिल कर पज़ल के टुकड़े उठाए, उन्हें डब्बे में वापस रखा। छोटे भूरे कुत्ते ने उन्हें यह करते देख अपनी पूंछ हिलाई।

सैंडी की माँ सैंडी को देख मुस्कुराईं। वह भी पलट का मुस्कुराया। दोनों ने एक भी शब्द नहीं कहा!